

SHRI DEVENDRA SWARUP (POSTHUMOUS)

Shri Devendra Swarup was a multifaceted personality, Freedom Fighter, Historian, Thinker, Teacher, Writer, Journalist and a Social Worker.

2. Born on March 30, 1926 in Kanth, a small town in Distt. Moradabad, Uttar Pardesh, Shri Swarup completed his schooling from Kanth and Chandousi in Uttar Pardesh. In 1946, he went to Banaras Hindu University (BHU) and completed BSc Geology in 1947. Later he was inclined to study History and completed his Post Graduation from Lucknow University in Ancient Indian History with Gold Medal.

3. In 1946 during his stay in BHU, Shri Swarup joined Rashtriya Swayansewak Sangh (RSS) and immediately after completing his graduation, he became full time Pracharak of RSS. In 1948 he was imprisoned for 6 months after RSS was banned on false charges of Gandhiji's murder. In 1964, he moved to Delhi and joined PGDAV College in Delhi University and retired in 1991 as Associate Professor in History. He was associated with Deendayal Research Institute in Delhi since its inception in 1972 and became its Honorary Director and later Vice President. During his tenure, articles published on subjects like Root of Kashmir Problem, Sikh History, Reservation Policy were highly respected for the reference material in them.

4. As a Writer and Journalist, Shri Swarup has to his credit almost 2000 articles published. He did deep study on Framing of Constitution and wrote books like 'Samvidhan ki Aupniveshik Pristhabhumi', 'Yeh Samvidhan Hamara ya Angrejo ka'. However one thing common to all his writings were the strong references, logical thinking and an eye to see contemporary issues with the lens of historical perspective. His books like 'Jaativihin Samaj ka Sapna', 'Sanskriti ne joda, Rajneeti ne Toda' are examples of his thought provoking writings. He was a avid reader and created a personal library of over 16,000 books centered on India and World History and Freedom Struggle.

5. Shri Swarup also served in various Committees appointed by the Government of India such as the Chairman of selection committee appointed by the Government of India for original work in Hindi on Environment, Member of the Committee formed for Tricentenary Celebration of Birth of Guru Gobind Singh ji, Member of Expert Committee for writing and evaluating History Text Books for NCERT. He donated his personal library to Indira Gandhi National Centre for Arts (IGNCA) in Delhi for use by other researchers.

6. Shri Swarup passed away on January 14, 2019.

पद्म श्री



श्री देवेन्द्र स्वरूप (मरणोपरांत)

श्री देवेन्द्र स्वरुप प्रतिभा के धनी व्यक्ति हैं। एक स्वतंत्रता सैनानी, इतिहासकार, विचारक, शिक्षक, लेखक, पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में आपका योगदान रहा है।

2. आपका जन्म 30 मार्च, 1926 को मुरादाबाद जनपद, उत्तर प्रदेश के एक छोटे से कस्बे कांठ में हुआ था। आपकी विद्यालयी शिक्षा-दीक्षा उत्तर प्रदेश में कांठ और चंदौसी में हुई। वर्ष 1946 में आपने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और वर्ष 1947 में जीव विज्ञान विषय में बी.एस.सी. पूरी की। बाद में आपका झुकाव इतिहास के अध्ययन की ओर हो गया और आपने प्राचीन भारतीय इतिहास में लखनऊ विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक के साथ स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की।

3. वर्ष 1946 में बी.एच.यू. में अपने प्रवास के दौरान, आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर.एस.एस.) से जुड़ गए और स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के तुरंत बाद आप आर.एस.एस. के पूर्णकालिक प्रचारक बन गए। आर.एस.एस. पर गांधी जी की हत्या के मिथ्या आरोप लगने के पश्चात आप छह: माह तक कारावास में रहे। वर्ष 1964 में, आप दिल्ली चले गए और दिल्ली विश्वविद्यालय में पी.जी.डी.ए.वी. कालेज में कार्यभार ग्रहण किया और वर्ष 1991 में इतिहास के एसोसिएट प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त हुए। आप दिल्ली के दीनदयाल अनुसंधान संस्थान से इसके स्थापना वर्ष 1972 से जुड़े हुए थे और इसके अवैतनिक निदेशक बने और बाद में इसके अध्यक्ष भी बने। आपके कार्यकाल के दौरान कश्मीर समस्या की जड़, सिख इतिहास, आरक्षण नीति जैसे विषयों पर प्रकाशित लेख इनमें निहित साम्रगी के संदर्भ में अत्यधिक सराहे गए हैं।

4. लेखक और पत्रकार के रूप में, आपको लगभग 2000 लेखों के प्रकाशन का श्रेय जाता है। अपने संविधान निर्माण की प्रक्रिया का गहन अध्ययन किया और 'संविधान की औपनिवेशिक पृष्ठभूमि','ये संविधान हमारा या अंग्रेजों का' जैसी पुस्तकें लिखीं। तथापि, मजबूत संदर्भ, तार्किक विचार और तत्कालीन समस्याओं को ऐतिहासिक परिपेक्ष्य से देखने का नजरिया आपके सभी लेखों में एक सामान्य बात थी। आपकी पुस्तकें जैसे 'जातिविहीन समाज का सपना',' संस्कृति ने जोड़ा,राजनीति ने तोड़ा' आपकी चिंतनशील लेखनी के उदाहरण हैं। आप एक जिज्ञासु पाठक थे और आपने भारत तथा विश्व इतिहास एवं स्वतंत्रता संग्राम पर केंद्रित 16,000 से अधिक पुस्तकों का व्यक्तिगत पुस्तकालय स्थापित किया।

5. आपने भारत सरकार द्वारा नियुक्त विभिन्न समितियों में भी सेवाएं दी हैं। आप पर्यावरण पर हिंदी में मौलिक कृति के लिए भारत सरकार द्वारा नियुक्त चयन समिति के अध्यक्ष, गुरु गोबिंद सिंह जी के 300वें प्रकाशपर्व का उत्सव मनाने हेतु गठित समिति के सदस्य, एनसीआरटी के लिए इतिहास की पुस्तकें लिखने और उसका मूल्यांकन करने के लिए विशेषज्ञ समिति के सदस्य रहे हैं। आपने अपने व्यक्तिगत पुस्तकालय को दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स (आईजीएनसीए) को दान कर दिया ताकि अन्य अनुसंधानकर्ता इसका लाभ ले सकें।

6. 14 जनवरी, 2019 को आप पंच तत्व में विलीन हुए।